International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 4; Issue 5; September 2018; Page No. 31-33

डॉ० नृपेन्द्र नाथ गुप्त द्वारा रचित काव्य संग्रह 'समय का सच' में राजनीति

पुलकित कुमार मण्डल
शोधार्थी, तिलकामाँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार, भारत।

प्रस्तावना

'समय का सच' डॉ0 नृपेन्द्र नाथ गुप्त द्वारा रचित काव्य–संग्रह है। इसका प्रकाशन "अखिल भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलन", बिहार, ब्रह्मस्थान पथ, शेखपुरा, पटना–800014 के द्वारा जून, 2007 में हुआ। इस संग्रह में तैंतीस कविताएँ हैं, जिनमें से 'राजनीति' से संबद्ध कविताओं की परिचर्चा एवं विश्लेषण करना ध्येय है।

कवि–परिचय

'समय का सच' कविता संग्रह के कवि डॉ0 नृपेन्द्र नाथ गुप्त का जन्म 1 सितम्बर, 1934 ई0 में ग्राम– माधोपुर, पो0– वासुदेवपुर नगर एवं जिला– मुंगेर में हुआ था। इनकी माता का नाम श्रीमती मैना देवी एवं पिता का नाम श्री उदित नारायण लाल था। वे शैशवावस्था में ही मातृहीन हो गए थे। इनका लालन–पालन इनके पिताजी एवं बुआ ने किया था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा नगरपालिका विद्यालय से 1946 ई0 में, माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक शिक्षा टाउन हाई स्कूल, मुंगेर से 1951 ई0 में, स्नातक शिक्षा– आर0डी0 एण्ड डी0 जे0 कॉलेज मुंगेर से 1955 ई0 में एवं स्नातकोतर की शिक्षा पटना विश्वविद्यालय, पटना से 1959 ई0 में हुई। इन्होंने जीवन–वृत्ति के लिए बिहार लोक सेवा आयोग से चयनित होकर भू–निबंधन पदाधिकारी के रूप में अपनी सेवा दी। इन्होनें समाज की सेवा, शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना एवं संचालन में सहयोग करते हुए साहित्य–रचना के माध्यम से भी की।

राजनीति की चर्चा

किसी भी राज्य के राज (शासन) के सफल संचालन के लिए वर्तमान सह भविष्य के अनुसार नीतिगत व्यवहार करना ही राजनीति है। इसका मुख्य उद्देश्य लोक–कल्याण होता है। विभिन्न विद्वानों ने राजनीति की परिभाषा निम्नलिखित प्रकार से दी है–

(क) ब्लुंशली के अनुसार– "राजनीतिशास्त्र वह विज्ञान है जिसका संबंध राज्य से है और जो यह समझाने का प्रयत्न करता है कि राज्य के आधारभूत तत्व क्या हैं, उसका स्वरूप क्या है, उसकी किन–किन रूपों में अभिव्यक्ति होती है तथा उसका विकास कैसे हुआ।"

(ख) डॉ0 गार्नर के अनुसार– "राजनीति–शास्त्र का प्रारंभ तथा अंत राज्य के साथ होता है।"

(ग) डॉ0 जकारिया के अनुसार– "राजनीति–शास्त्र व्यवस्थित रूप में उन आधारभूत सिद्धान्तों का निरूपण करता है जिनके अनुसार समष्टि रूप में राज्य का संगठन होता है और प्रभुसत्ता का उपयोग किया जाता है ।

(घ) सीले के अनुसार– "राजनीति–विज्ञान शासन के तत्वों का अनुसंधान उसी प्रकार करता है जैसे– सम्पत्ति शास्त्र सम्पत्ति का, जीव विज्ञान जीवन का, अंकगणित अंकों का तथा रेखागणित स्थान एवं लंबाई –चौड़ाई का करता है।"

(ड़) लीकॉक के अनुसार–" राजनीति–विज्ञान सरकार से संबंधित शास्त्र है।"इस प्रकार सार रूप में राजनीति की यही परिभाषा दी जा सकती है कि जो नीति राज्य से संबंधित हो, राजनीति कहलाती है ।

(नोट– विभिन्न विद्वानों द्वारा राजनीति की प्रदत्त परिभाषाएँ इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री से ली गई हैं।)

उपर्युक्त राजनीति की परिभाषाओं से हमें राजनीति की वास्तविकता एवं जनकल्याण में उसके महत्व का पता चलता है, लेकिन विगत कुछ वर्षों से राजनीति विकृत हो चुकी है। अब राजनीति में जन–कल्याण गौण होकर स्वकल्याण एवं परिवार–कल्याण ही मुख्य हो चुके हैं। इसके लिए जनता का दमन, शोषण, विपणन, आश्वासन, सम्प्रदायीकरण एवं असमाजीकरण का उपयोग कथित नेता करने लगे हैं। आज राजनीति विकृत होकर दलदल बन चुकी है, जिसे दूर से ही देखकर समाज के सभ्य, शिक्षित एवं सत्यनिष्ठ व्यक्ति किनारा कर लेते हैं। राजनीति के दलदल में वही लोग उतरते हैं जिसने वह दलदल बनाया है।

राजनीति में आगत विकृतियों पर ही कवि नृपेन्द्र नाथ गुप्त ने व्यंग्य कर हमें सजग करने का प्रयास किया है।

'समय का सच' कविता–संग्रह की प्रथम कविता 'नया गाँधी' में राजनीति में व्याप्त हिंसा की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया गया है। जैसे–

"हर गली चौराहे पर
सभी छोटा–बड़ा नया गाँधी ?
बम गोलियों से लैस
बेरोक–टोक बाहुबलियों के कंधों पर सवार
घूम रहा है.....''

– समय का सच, पृ0–11

जिन–जिन नेताओं ने स्वयं को देश का विकास–नायक और तारणहार समझा, उन्होंने ही देश का शोषण कर नाश कर दिया। "इण्डिया दैट इज भारत" कविता में कवि नृपेन्द्र नाथ गुप्त ने देश के मुख से स्वयं कहलवाया है–

"हम भी कभी
समृद्ध थे, खुशहाल थे
आज के सत्ताभोगी देशभक्तों (?) ने
आजादी के बाद
मेरी यह हालत बना दी है।"

– समय का सच, पृ0–13

यह बात वास्तव में सच है कि नेताओं की उपेक्षा और जनता को भ्रमित कर केवल वोट लेने की नीति से हमारी सभ्यता–संस्कृति

धूमिल होती जा रही है। नेता केवल 'कमीशन' वाले कार्यों को ही बढ़ावा देते हैं। भले ही उससे जन–कल्याण हो या ना हो। नेता जनता के बीच वैसे मुद्दों (?) को बनाए रखना चाहते हैं, जिससे हर बार वोट प्राप्त किये जा सके।
अधिकांश नेताओं के कुकृत्य से जनता इतनी पीड़ित हो चुकी है कि वह किसी भी रूप में नेताओं से अपना संबंध नहीं रखना चाहती। वैसे नेताओं से केवल लालची लोग ही जुड़े रहते हैं; सच्चे, अच्छे और स्वाभिमानी लोग नहीं। अपनी कविता 'अंतिम इच्छा' में कवि नृपेन्द्र नाथ गुप्त ने एक सच्चे, अच्छे लेकिन बीमार और मरणासन्न व्यक्ति की अंतिम इच्छा के रूप में यही प्रकट किया है कि मैं मर भले ही जाऊँ लेकिन नेताओं की किसी भी कृपा (?) की हवा भी मुझे लगने नही पाए। जैसे–

"नेताजी को बाजू में खड़ा देख
रोगी क्षीण अवाज में बोला,
'इसका खून मुझे मत चढ़ाना'
कम से कम मुझ पर इतनी मेहारबानी दिखाओ
यदि इसके खून से मैं बच भी गया
तो समझो जीतेजी मर गया ।"

– समय का सच, पृ0–14

जिस प्रकार भूख और गरीबी से त्रस्त व्यक्ति योग्यता और विवेक के अभाव में आपराधिक संसार में प्रवेश कर कुकृत्य को ही अपनी जीविका बना लेता है, उसी प्रकार अकर्मण्य व्यक्ति जीविका के रूप में 'नेतागीरी' ही करने लगते हैं। हद तो तब पार हो जाती है जब नेता–मंत्री अपने बच्चों को समाज के लिए अति प्रमुख कार्यों में ना लगाकर आराम–तलबी और रसूखवाले कार्य 'नेतागीरी' में ही लगा देते हैं, तो इस प्रकार के नेता–मंत्री सामान्य जन से संबद्ध कार्यों को क्या प्रमुखता देंगे?
कवि श्री नृपेन्द्र नाथ गुप्त ने 'तब और अब' कविता में नेताओं पर व्यंग्य करते हुए नेताओं के ही मुख से आत्म–सवेकृति स्वरूप कहलवाया है–

"पहले मैं
एक ईमानदार इंसान था
लगातार भूख और गरीबी ने
मुझे नेता बना दिया
बेईमानी से अब डर नहीं,
बन गया हूँ
सदाचार समिति का प्रधान
धोखाघड़ी और उलटफेर में महान ।"

– समय का सच, पृ0–17

आज की भारतीय राजनीति ऐसी हो गई है कि नेता आश्वासन के बीज बोने के साथ–साथ आश्वासन की रोटी खिलाकर ही जनता को संतुष्ट कर देते हैं, और फिर उनके वोटों की फसल लहलहा उठती है जिससे चुनावी जीत रूपी फल भी प्राप्त कर लेते हैं। अपनी कविता 'आश्वासन की रोटी' में कवि श्री गुप्त ने नेताओं की मानसिकता का वर्णन करते हुए कहा है–

"सत्ता में आने के बाद हमने देखा
गरीबी हटाना आवश्यक नहीं
जैसा कि हम पहले सोचते थे।"

– समय का सच, पृ0–19

नेता सिद्धांतहीन, स्वार्थी और अवसरवादी होते हैं। इसी सिद्धांतहीनता और अवसरवादिता के कारण राष्ट्र का वर्तमान जर्जर और भविष्य अनिश्चितताओं और भ्रमों से भर गया है। कवि श्री गुप्तजी ने अपनी कविता 'पराजित मानव' में नेताओं को अपने सिद्धांतों से पराजित बताया है और कहा है–

"सम्पूर्ण क्रांति की कोख से
जन्मी तुम्हारी यह शासन–व्यवस्था
आज उतनी ही भ्रष्ट है,
जिसकी तुम कभी निंदा किया करते थे ।"

–समय का सच, पृ0–26

कवि श्रीगुप्तजी ने अपनी कविता 'देश निकाला' में वर्तमान की राजनीतिक व्यवस्था पर व्यंग्य किया है। देश के नीति–नियंताओं ने राष्ट्रीय सिद्धांतों और कर्त्तव्यों को इस प्रकार भुला दिया है, मानो उसे देश–निकाला का दण्ड दे दिया गया हो। आज की राजनीति में आपराधिक प्रवृति के व्यक्ति को आसानी से प्रवेश मिल जाता है, क्योंकि वह आसानी से धन और जन उपलब्ध करा देता है। कविता की प्रस्तुत पंक्तियाँ द्रष्टव्य है–

"कौन कहता है
उन्हें देश निकाला नहीं दिया है,
.....
उस बूढ़े दकियानूस गाँधी को भूल जाओ
जो सत्य, अहिंसा का अवतार था
उस नए 'गाँधी' को याद करो ।"

–समय का सच, पृ0–28

'आज का गाँधी' कविता में कवि श्री गुप्तजी ने वर्तमान के नेता और स्वतंत्रता प्राप्ति तक के नेताओं की तुलना करते हुए यह परिणाम बताया है कि पहले के नेता परमार्थी, समर्पित एवं सहनशील होते थे, लेकिन वर्तमान के अधिकांश नेता स्वार्थी, अकर्मण्य एवं असहिष्णु होते हैं। गाँधीजी जैसे नेता हिंसा, विद्वेष एवं घृणा को दूर करने के लिए अपना तन–मन एवं जीवन लगा देते थे, लेकिन वर्तमान में नेता हिंसा एवं विद्वेष फैला देते हैं।

कविता की प्रस्तुत पंक्तियों में वर्तमान की विकृत राजनीति देखी जा सकती है–

"आजादी के पूर्व का गाँधी
.....
जख्मी व घायल मन को
मरहम लगाता था ।
किन्तु, आज का गाँधी
सत्ता के साये में
जहाँ से गुजरता वहाँ .....
हिंसा, विद्वेष और घृणा की आग
सुलगाता है ।"

– समय का सच ,पृ0–40

कवि श्री नृपेन्द्र नाथ गुप्त के कविता संग्रह 'समय का सच' की अन्य कविताएँ भी विकृत हो चुकी राजनीति की ओर हमारा ध्यान खींचती हैं। जैसे– 'चुनाव की घोषणा' कविता में चुनाव में व्याप्त आडम्बर, भ्रष्टाचार, अपराध एवं शोषण के बारे में बताया गया है।

वर्तमान में चुनाव में विजयी होना नेताओं की योग्यता का प्रमाण नहीं, बल्कि धन–बल और बाहुबल का प्रमाण है।

'आस्था' शीर्षक कविता में कवि ने सत्ता के प्रति आस्थावान नेताओं की दल–बदल प्रवृति को उजागर किया है। 'दर्द' शीर्षक कविता में कवि ने नेताओं के दोहरे चरित्र को उजागर किया है। नेता अप्रत्यक्ष रूप से जनता का शोषण कर उन्हें दर्द देता है और प्रत्यक्ष रूप में हमदर्द बनने का ढोंग कर, भ्रमित कर वोट–बैंक को समृद्ध कर लेता है। 'सच्चाई का शिशु' कविता में कवि ने हमें यह बताने की चेष्टा की है कि नेताओं द्वारा अवांछित कार्यों में ध्यान लगा देने के कारण उसका सच्चाई रूपी शिशु खो गया है, जिसे ढूँढ़ने का उसने कभी प्रयास भी नहीं किया। शायद उसे अब उसकी कभी जरूरत ही नहीं पड़ेगी! 'धार्मिक उन्माद का जहर' कविता में कवि ने हमें यह बताने की चेष्टा की है कि नेता धार्मिक उन्माद के जहर से जनता के विवेक को मार देते हैं और फिर विवेकहीन जनता का उपयोग धरना–प्रदर्शन, आंदोलन एवं चुनाव में कर सत्ता हासिल कर लेते हैं। धार्मिक समस्या को सबसे बड़े संकट के रूप में जनता के सामने रखा तो जाता है लेकिन उसका निदान करने की चेष्टा नहीं की जाती है। जनता के हित–अहित से नेता को कोई फर्क नहीं। 'धार्मिक उन्माद का जहर' कविता की कुछ पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं–

"बुढ़िया राम मंदिर के दरवाजे पर
और बूढ़ा मौलवी
बाबरी मस्जिद की सीढ़ी पर
भूख–प्यास से तड़प रहा था ।
किन्तु कोई भी हिन्दू या मुसलमान
इन जीवितों को बचाने
आगे नहीं आया ।"

– समय का सच, पृ0–62

'दूसरी आजादी' कविता में कवि श्री गुप्तजी ने यह बताने की चेष्टा की है कि अंग्रेजों से प्राप्त आजादी केवल सत्ता का हस्तांतरण है, वास्तविक आजादी नहीं। नेताओं को आर्थिक लाभ की पूरी आजादी है, लेकिन जनता रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, चिकित्सा, सड़क, सुरक्षा एवं प्रतिष्ठा के लिए तरस रही है। इसलिए, जनता को इन नेताओं से दूसरी आजादी चाहिए। 'नये समाज के निर्माण का सपना' कविता में यह बताया गया है कि नेता जनता को नये–नये सपने दिखाकर उसका शारीरिक, मानसिक, आर्थिक एवं धार्मिक शोषण कर सत्ता हासिल करते हैं।

'वफादार कुत्ते' कविता में कवि ने नेता के चाटूकार जन एवं प्रशासनिक अधिकारी को वफादार कुत्ते के रूप में प्रस्तुत किया है। नेता उनके सहारे ही देश का आर्थिक दोहन करते हैं और सुरक्षित भी रहते हैं।

'लोकतंत्र के प्रहरी' कविता में कवि श्री गुप्तजी ने लोकतंत्र के प्रहरी कहे जाने वाले नेताओं की वास्तविकता से हमारा परिचय कराया है कि हमारे लोकतंत्र–प्रहरी को लोकतंत्र का ककहरा तक पता नहीं होता, वे तो इसकी आड़ में येन–केन प्रकारेण चुनाव जीत कर केवल देश का आर्थिक शोषण करना जानते हैं।

'भारतीय नेता' कविता में कवि ने यह बताने की चेष्टा की है कि अधिकांश नेताओं को भारतीय इतिहास एवं सभ्यता–संस्कृति की समझ ही नहीं है, उसका सम्मान करना तो दूर की बात है। नेताओं को केवल यह पता होता है कि अपना आर्थिक हित कैसे साधना है। उसके लिए देश एवं जनता को हानि ही क्यों न पहुँच जाय। 'भारतीय नेता' कविता की पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं–

"दीपावली पर
चूना पोतनेवाले मजदूरों ने
भवन की ऊँची मीनार पर उकेरे
भारत के मानचित्र पर
चूना पोतने से इनकार कर दिया।

नेताजी ने पूछा–
'क्या तुम काम करना नहीं चाहते?
.....

उसने कहा–
मैं केवल दीवालों को साफ करता हूँ
उसी पर चूना लगाता हूँ।
भारत माता पर चूना लगाने का काम
भारतीय नेता ही कर सकते हैं। "

– समय का सच, पृ0–77

इस प्रकार श्री नृपेन्द्र नाथ गुप्त के कविता संग्रह 'समय का सच' की अधिकांश कविताओं के माध्यम से वर्तमान की विकृत भारतीय राजनीति की झलक हमें मिल जाती है।

संदर्भ सूची

1. राजनीतिक सिद्धांत; डॉ० एस०सी० सिंघल, प्रकाशक – लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, वर्ष – 2012–2015 पृ०सं० – 2
2. राजनीति विज्ञान; डॉ० जे० सी० जौहरी, प्रकाशक – एस०बी०पी०डी० पब्लिकेशंस आगरा, पृ० सं० – 208
3. राजनीतिक सिद्धांत; डॉ० एस०सी० सिंघल, प्रकाशक – लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, वर्ष – 2012–2015 पृ०सं० – 5
4. राजनीति विज्ञान; डॉ० जे० सी० जौहरी, प्रकाशक – एस०बी०पी०डी० पब्लिकेशंस आगरा, पृ० सं० – 208
5. राजनीतिक सिद्धांत; डॉ० एस०सी० सिंघल, प्रकाशक – लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, वर्ष – 2012–2015 पृ०सं० – 2
6. समय का सच (काव्य संग्रह); डॉ० नृपेन्द्र नाथ गुप्त, प्रकाशक – अखिल भारतीय भाषा–साहित्य सम्मेलन, बिहार, ब्रह्मस्थान पथ, शेखपुरा, पटना – 800014, वर्ष – 2007, पृ० सं० – 11
7. वही, पृ० सं० – 13
8. वही, पृ० सं० – 14
9. वही, पृ० सं० – 17
10. वही, पृ० सं० – 19
11. वही, पृ० सं० – 26
12. वही, पृ० सं० – 28
13. वही, पृ० सं० –40
14. वही, पृ० सं० – 62
15. वही, पृ० सं० – 77